साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/

ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 02
March 2015

अन्तर्द्वन्द्व

आशुतोष पाण्डेय 'अंश '

जड़ हो गया तन, मन करे क्रंदन
धधके छाती लिए कोई अगन
अब अंखियन ने भी दिखा दी माया
बिसरत नाहीं उसकी काया
एक घडी अब पहर सा लागे
आठों पहरवा अब हम जागे

निंदिया रानी रूठ गयी क्यों
दिल को मेरे कूट गयी क्यों
प्यार में क्या ऐसे होता है
विरह में दिल ऐसे रोता है

प्यार है पूँजी, प्यार कमाई
प्यार के आगे फीकी खुदाई
मिलन-विरह हैं प्यार के नखरे
फिर विरहन बन क्यों दिल बिफरे

विरह-व्यथा में मिलन छिपा है
प्रियतम का सब रतन छिपा है

साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 02
March 2015

विरह-वेदना पीकर देखो
विरहन बनकर जीकर देखो

कौन कहे की विरह सजा है
विरह में मिलन से अधिक मजा है
उसकी यादों में खोकर, अपनी आँखों को रोने दो
उसकी बातो की वाणों से, सीने को छलनी होने दो

दिल में तेरे प्रियतम खातिर
न कहीं कोई फ़रियाद रहे
तेरे मानस में बस उसका
प्यार, प्यार और प्यार रहे